सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

कविता का सार / प्रतिपाद्य

उत्साह- यह आह्वान कविता है। इस कविता में कवि बादल को पुकारकर नवजीवन के लिए प्रोत्साहित करता है। उसके अनुसार बादल इतनी क्षमता रखते हैं कि गरीब तथा भूखे-प्यासे लोगों का जीवन बदल सकता है। इसके अतिरिक्त कवि बादलों को विप्लव, क्रांति तथा विध्वंस का प्रतीक मानता है। इससे नवजीवन का अंकुर फूटता है। अतः वह उनका आह्वान करता है।

अट नहीं रही है- यह कविता फागुन मास के सौंदर्य का वर्णन करती कविता है। इस मास में प्रकृति का सौंदर्य वातावरण में मादकता भर देता है। जो मनुष्य के मन तथा हृदय को रोमांचित कर देता है।

कविता का भाव सौंदर्य

उत्साह- इस कविता का भाव यह है कि एक कवि को बादलों के समान विप्लव, विध्वंस तथा क्रांति के बीज समाज में बोने चाहिए। इस तरह वह समाज में व्याप्त सड़ी-गली परंपराओं का विनाश करके नवजीवन का संचार कर सकता है। यह स्थिति समाज के लिए बहुत आवश्यक है।

अट नहीं रही है- प्रकृति में बदलाव मनुष्य के जीवन को रोमांच तथा सौंदर्य से भर देता है।

कविता की भाषा शैली की विशेषताएँ

- अलंकारों का सुंदर प्रयोग है।
- छायावादी शैली में लिखा गया है।
- खड़ी बोली में कविता लिखी गई है।
- तत्सम शब्दों के प्रयोग से खड़ी बोली का सौंदर्य अद्भुत रूप से निकलकर आया है।

कविता का उद्देश्य

- खड़ी बोली के साहित्य तथा भाषा से विद्यार्थियों का परिचय कराना।
- विद्यार्थियों की वैचारिक और विश्लेषण क्षमता का विकास कराना।
- छायावादी कविताओं तथा कवियों को समझने का अवसर देना।

कविता का संदेश

- एक कवि को अपना कर्तव्य समझकर कविता निर्माण करना चाहिए।
- हमें प्रकृति के साथ रहना चाहिए। उसका सौंदर्य हमारे जीवन की नीरसता को समाप्त कर देता है।